नं. 1

संजीव®

बुक्स

चित्रकला-XI

भारतीय कला का परिचय : भाग-1

(कक्षा 11 के विद्यार्थियों के लिए नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार)

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 280/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

  मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

  *****

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

भारतीय कला का परिचय : भाग-1

1. प्रागैतिहासिक शैल-चित्र 1-17

2. सिंधु घाटी की कलाएँ 18-36

3. मौर्यकालीन कला 37-52

4. भारतीय कला और स्थापत्य में मौर्योत्तरकालीन प्रवृत्तियाँ 53-109

5. परवर्ती भित्ति चित्रण परम्पराएँ 110-131

6. मंदिर स्थापत्य और मूर्तिकला 132-188

7. भारतीय कांस्य प्रतिमाएँ 189-205

8. इण्डो-इस्लामिक वास्तुकला के कुछ कलात्मक पहलू 206-232

◆◆◆

चित्रकला कक्षा-11

भारतीय कला का परिचय : भाग-1

1. प्रागैतिहासिक शैल-चित्र

पाठ-सार

1. अत्यन्त प्राचीन अतीत, जिसके लिए न तो कोई पुस्तक और न ही कोई लिखित दस्तावेज उपलब्ध है, उसे **प्राक् इतिहास** (Pre-history) कहा जाता है। प्राक् इतिहास को हम प्रायः **प्रागैतिहासिक काल** (Pre-historic times) कहते हैं।
2. प्रागैतिहासिककालीन स्थलों की खुदाई से प्राप्त पुराने औजारों, मिट्टी के बर्तनों, आवास स्थलों, मनुष्यों व जानवरों की हड्डियों के अवशेषों से प्राप्त जानकारियों तथा तत्कालीन मनुष्यों द्वारा गुफाओं की दीवारों पर खींची गई आकृतियों से उस काल के मनुष्यों के रहन-सहन व जीवन-शैली व विचारों व भावों का पता लगता है।
3. **पुरा पाषाण काल**—मानव के आरंभिक विकास के इस प्रागैतिहासिक काल को आमतौर पर परपुरा पाषाण काल (Paleolitihic age) अर्थात् पुराना पत्थर काल कहा जाता है।
4. **प्रागैतिहासिक चित्रकारियाँ**—प्रागैतिहासिक चित्रकारियाँ दुनिया के अनेक भागों में पाई गई हैं। पूर्व-पुरा **पाषाण काल** (Lower Paleolithic age) की कला वस्तुएँ प्राप्त नहीं हैं। संभवतः **उत्तर-पुरा पाषाण काल** (Upper Paleolithic age) तक आते-आते मनुष्य के कलात्मक क्रियाकलाप बढ़े। इस काल की अनेक गुफाओं की दीवारों पर जानवरों के सुंदर चित्र, मनुष्यों एवं उनकी गतिविधियों के चित्र तथा वृत्त, वर्ग, आयत जैसी ज्यामितीय आकृतियां व प्रतीक मिले हैं।
5. **भारत की गुफाओं में स्थित शैल चित्र**—भारत में शैल चित्रों की सर्वप्रथम खोज 1867-68 में की गई। कॉकबर्न, एंडरसन, घोष पहले शोधकर्ता थे जिन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप में ऐसे अनेक स्थल खोजे थे।

(i) लखुडियार की गुफाओं के चित्र—अल्मोड़ा से 20 किमी दूर स्थित **लखुडियार** में एक लाख गुफाओं में इस काल के प्राप्त शैल चित्रों को तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है—मानव चित्र, पशु चित्र और ज्यामितीय आकृतियाँ। ये चित्र सफेद, काले और लाल रंगों के हैं।

इन चित्रों में दर्शाए गए दृश्यों में से एक चित्र में मानव आकृतियों को हाथ पकड़कर नाचते हुए दिखाया गया है।

(ii) कुपगल्लू, पिकलिहाल और टेक्कलकोटा के शैल चित्र—इन स्थानों में तीन तरह के चित्र पाए जाते हैं—कुछ चित्र सफेद रंग के, कुछ लाल रंग के और कुछ सफेद पृष्ठभूमि पर लाल रंग के हैं। ये चित्र परवर्ती ऐतिहासिक काल, आरंभिक ऐतिहासिक काल और नवपाषाण काल के हैं। इनमें विभिन्न पशुओं, मानव तथा त्रिशूल व वनस्पतियों के चित्र हैं। कुपगल्लू के एक चित्र में बड़े-बड़े अंगों वाले कामोद्दीप्त पुरुषों को स्त्रियों को भगाकर ले जाते हुए दिखाया गया है।

(iii) भीमबेटका के शैल चित्र–सबसे अधिक और सुन्दर शैल चित्र मध्य प्रदेश में विंध्याचल की श्रृंखलाओं और उत्तर प्रदेश की कैमूर की पहाड़ियों में मिले हैं। इनमें सबसे बड़ा और अत्यन्त दर्शनीय स्थल मध्य प्रदेश में विंध्याचल की पहाड़ियों में स्थित **भीमबेटका** है।

यहाँ पाए गए चित्रों के विषय हैं–शिकार, संगीत, हाथी-घोड़ों की सवारी, जानवरों की लड़ाई, शहद इकट्ठा करने, शरीर सज्जा तथा मुखौटा लगाने जैसी अनेक घरेलू गतिविधियों के चित्र।

भीमबेटका की शैल-कला को शैली, तकनीक और आधार के अनुसार कई श्रेणियों में बाँटा गया है। इन्हें सात कलावधियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। पहला काल है–उत्तर पुरापाषाण युग, दूसरा–मध्य पाषाण युग और तीसरा है–ताम्र पाषाण युग। इनके बाद एक के बाद एक चार ऐतिहासिक कालावधियां आती हैं। प्रथम दो कालावधियों का कला चित्रण इस प्रकार है–

(क) उत्तर पुरापाषाण युग–इस काल के चित्र हरी और गहरी लाल रेखाओं से बने छड़ी जैसी पतली मानव-आकृतियाँ तथा बड़े-बड़े जानवरों (भैंसों, हाथियों, बाघों, सूअरों आदि) के हैं। कुछ चित्र धवन चित्र हैं, लेकिन अधिकांश ज्यामितीय चित्र हैं।

(ख) मध्य पाषाण युग–इस अवधि के दौरान चित्रों का आकार छोटा हो गया है तथा शिकार के दृश्यों की प्रमुखता है। मनुष्यों को अनेक वेष-भूषाओं में दिखाया गया है। बड़े जानवरों के साथ-साथ छोटे-छोटे जानवरों व पक्षियों को भी चित्रित किया गया है। स्त्रियों को निर्वस्त्र और सवस्त्र दोनों ही रूपों में चित्रित किया गया है। बच्चों को दौड़ते-भागते, उछलते-कूदते दिखाया गया है। सामूहिक नृत्य इन चित्रों का आम विषय रहा है। कुछ चित्र शहद इकट्ठा करते हुए, स्त्रियों को अनाज पीसते व खाना बनाते हुए दिखाया गया है।

भीमबेटका के कलाकारों द्वारा काला, पीला, लाल, बैंगनी, भूरा, हरा और सफेद रंगों का प्रयोग किया गया है।

यहाँ कलाकारों ने अपने शैल चित्र शैलाश्रयों की सतहों, दीवारों और भीतरी छतों पर बनाए हैं।

इन चित्रों में तत्कालीन पर्यावरण के सामान्य दृश्य आकर्षक रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। चित्रों में मनुष्यों और जानवरों को स्वयं को जीवित रहने के लिए संघर्षरत दिखाया गया है। अकेले जानवरों के चित्रों में रंग-सामञ्जस्य और समानुपात दोनों का यथार्थ एवं संतुलित मिश्रण दिखाई देता है।

निष्कर्ष–इन प्राक्-ऐतिहासिक चित्रों से हमें तत्कालीन मनुष्यों, उनकी जीवन-शैली, उनका खान-पान, उनकी आदतें, उनकी दैनिक गतिविधियाँ तथा उनके चिंतन को जानने समझने में सहायता मिलती है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. आपके विचार से प्रागैतिहासिक काल के लोग चित्रों के विषयों का चयन/चुनाव किस प्रकार करते थे?

उत्तर–हमारे विचार से प्रागैतिहासिक काल के लोग चित्रों के विषयों का चुनाव अपने रोजमर्रा के जीवन की घटनाओं, रोजमर्रा की गतिविधियों से संबंधित जानवरों, वनस्पतियों व औजारों के आधार पर करते थे।

प्रश्न 2. गुफा चित्रों में मानव आकृतियों की अपेक्षा जानवरों की आकृतियाँ अधिक होने के क्या कारण रहे होंगे?

उत्तर–गुफा चित्रों में मानव आकृतियों की अपेक्षा जानवरों की आकृतियाँ अधिक होने का कारण जानवरों के शिकार का आनंद, शिकार हेतु की जाने वाली नाटकीयता और शिकार हेतु किया जाने वाला संघर्ष उस काल का एक मुख्य दैनिक क्रियाकलाप था। दूसरे, इस काल के मनुष्यों में जानवरों पर अधिकार रखने का भाव पैदा हो गया था। इसलिए बहुत से चित्रों में जानवरों के प्रति प्यार और सौहार्द भाव प्रकट करते हुए चित्रित किया गया है। कुछ चित्रों में प्रमुख रूप से जानवर ही उकेरे गए हैं।

प्रश्न 3. इस अध्याय में प्रागैतिहासिक काल के अनेक गुफा चित्र दिए गए हैं। इनमें से कौनसा चित्र आपको सबसे अधिक पसंद है और क्यों? उस चित्र का समालोचनात्मक विवेचन कीजिए।

उत्तर–इस अध्याय में दिए गए चित्रों में से मुझे पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ 6 पर दिया गया 'शिकार का दृश्य' नामक चित्र सबसे अधिक पसंद है।

इस चित्र में लोगों का एक समूह भैंसे को मारते हुए दिखाया गया है। कुछ घायल व्यक्तियों को इधर-उधर पड़ा दर्शाया गया है। शिकारी लोगों के हाथों में काँटेदार भाले तथा नोकदार डंडे हैं, जिनको लेकर वे भैंसे का शिकार कर रहे हैं।

यह चित्र अंकन की कला में श्रेष्ठता का प्रदर्शन करता है तथा तत्कालीन मानव की शिकार की गतिविधि की स्वाभाविकता को दर्शाता है।

प्रश्न 4. भीमबेटका के अलावा और कौन से प्रमुख स्थल हैं जहाँ से प्रागैतिहासिक चित्र पाए गए हैं? इन चित्रों के भिन्न-भिन्न पहलुओं पर इनकी तस्वीरों तथा रेखाचित्रों के साथ एक रिपोर्ट तैयार करें।

उत्तर–भीमबेटका के अलावा प्रागैतिहासिककालीन चित्रों के स्थल–भीमबेटका के अलावा प्रागैतिहासिक काल के पाए गए प्रमुख चित्र स्थल निम्नलिखित हैं–

(1) लखुडियार–अल्मोड़ा बारेछिना मार्ग पर अल्मोड़ा से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर सुयाल नदी के किनारे स्थित लखुडियार में पाए गए शैलाश्रयों में प्रागैतिहासिक काल के अनेक चित्र मिले हैं।

यहाँ पाए जाने वाले चित्रों को तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है–(i) मानव चित्र (ii) ज्यामितीय आकृतियाँ और (iii) पशु चित्र। ये चित्र सफेद, काले और लाल रंगों के हैं।

(i) मानव चित्र–इन चित्रों में मनुष्यों को छड़ी के रूप में दिखाया गया है। इन चित्रों में दर्शाए गए दृश्यों में एक में मानव आकृतियों को हाथ पकड़कर नाचते हुए दिखाया गया है।

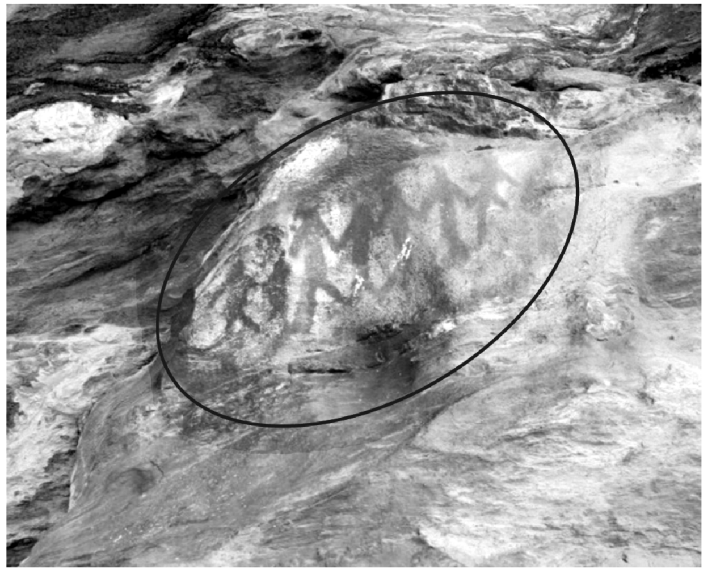

चित्र : हाथों में हाथ डाले नृत्य करते हुए लोग

(ii) ज्यामितीय आकृतियाँ–लहरदार रेखाएँ, आयताकार ज्यामितीय डिजायनों और अनेक बिन्दुओं के समूह इन चित्रों में देखे जा सकते हैं।

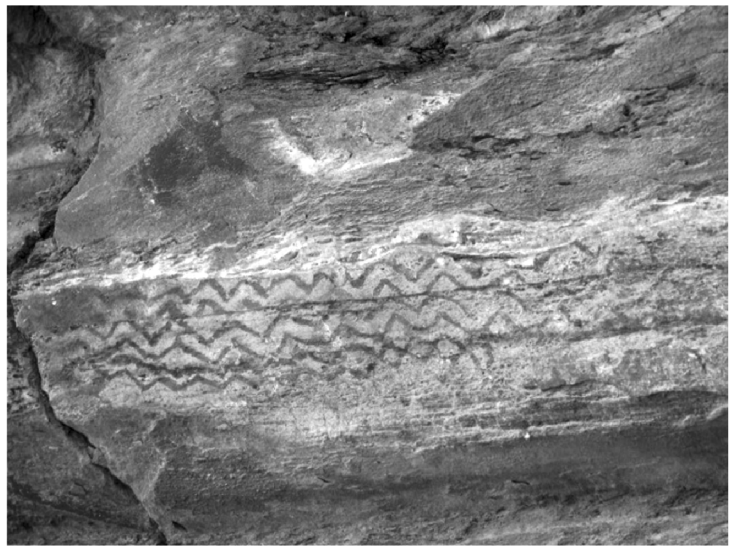

चित्र : लहरदार लकीरें, लखुडियार

(iii) पशु चित्र–पशु चित्रों में, एक लम्बे थूथन वाला जानवर, एक लोमड़ी और कई रंगों वाली छिपकली चित्रकारी के मुख्य विषय हैं।

(2) कुपगल्लू, पिकलिहाल और टेक्कलकोटा–आंध्र प्रदेश और कर्नाटक स्थित तीन स्थानों कुपगल्लू, पिकलिहाल और टेक्कलकोटा में तीन तरह के चित्र पाए जाते हैं। कुछ चित्र सफेद रंग के हैं, कुछ लाल रंग के और कुछ सफेद पृष्ठभूमि पर लाल रंग के हैं।

ये चित्र परवर्ती ऐतिहासिक काल, आरंभिक ऐतिहासिक काल और नवपाषाण काल के हैं। इन चित्रों के विषय हैं–साँड, हाथी, सांभर, चिंकारा, भेड़, बकरी, घोड़ा, शैलकृत मानव, त्रिशूल आदि। कुपगल्लू के एक चित्र में एक अत्यन्त विचित्र दृश्य प्रस्तुत किया गया है जिसमें बड़े-बड़े अंगों वाले कामोद्दीप्त पुरुषों को स्त्रियों को भगाकर ले जाते हुए दिखाया गया है।

प्रश्न 5. आज के समय में चित्र, ग्राफिक आदि बनाने के लिए दीवारों की सतह के रूप में किस प्रकार उपयोग किया जाता है?

उत्तर–आज के समय में चित्र, ग्राफिक आदि बनाने के लिए दीवारों की सतह के रूप में दो पद्धतियाँ प्रचलित हैं–

(1) आलागीला पद्धति–ताजा प्लास्तर की हुई भित्ति पर चित्रण कार्य आलागीला पद्धति है। इस पद्धति में दीवार बनाते समय ही चूने-बालू या संगमरमर के चूर्ण का मोटा लेप लगा दिया जाता है। लेप के जम जाने व सूखने से पूर्व ही नम प्लास्तर पर खनिज रंगों को इस प्रकार लगाया जाता है कि रंग और धरातल एक हो जाते हैं। आलागीला पद्धति की भी दो पद्धतियाँ प्रचलित हैं–(i) इतालवी पद्धति, (ii) जयपुरी पद्धति। यथा–

(i) इतालवी पद्धति–इतालवी पद्धति में गीले चूने में दो भाग बालू मिलाकर दीवार पर प्लास्तर चढ़ाते हैं। गीली सतह पर ही नुकीली लकड़ी या धातु से रेखांकन कर लेते हैं। खाका को दीवार पर रखकर गेरू पाउडर को मलमल के कपड़े में डालकर उसे दबाकर रेखांकन बना लेते हैं। ग्रिड की सहायता से मुक्त हस्त से रेखांकन कर सकते हैं। इसके पश्चात् केवल खनिज रंगों का ही चित्रण में प्रयोग किया जाता है। गीले प्लास्तर में लगाए जाने के कारण रंग प्लास्तर द्वारा शोषित होकर गहरे पैठ जाते हैं और प्लास्तर का एक अविभाज्य अंग बन जाते हैं।

(ii) जयपुर की दीवार चित्रण पद्धति–जयपुर की दीवार चित्रण पद्धति भी इसी प्रकार की है। इसमें गीली सतह पर रंग लगाने के बाद उस पर अकीक पत्थर या ओपनी से धरातल की घिसाई कर उसमें चमक लाई जाती है।

(2) सूखी पद्धति–सूखी पद्धति में दीवार को उपरोक्त विधि से ही तैयार करके उसके पूर्ण रूप से सूखने के बाद चित्रण किया हुआ कार्य सूखी पद्धति कहलाती है। इसमें रंगों के माध्यम के बाद गोंद, सरेस व अंडे की जर्दी का प्रयोग किया जाता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. उत्तर पुरापाषाण काल के गुफा चित्रों में अधिक आकृतियाँ हैं–
   (अ) जानवरों की (ब) मनुष्यों की
   (स) ज्यामितीय (द) पक्षियों की
2. अत्यन्त प्राचीन अतीत जिसके लिए न तो कोई पुस्तक और न ही कोई लिखित दस्तावेज उपलब्ध है, उसे कहा जाता है–
   (अ) आधुनिक काल (ब) मध्यकाल
   (स) प्राचीनकाल (द) प्रागैतिहासिक काल
3. भारत में शैल-चित्रों की सर्वप्रथम खोज हुई–
   (अ) 1867-68 में (ब) 1967-68 में
   (स) 1767-68 में (द) 1667-68 में
4. जिस स्थान के एक चित्र में बड़े-बड़े अंगों वाले कामोदीप्त पुरुषों को स्त्रियों को भगाकर ले जाते हुए दिखाया गया है, वह है–
   (अ) पिकलिहाल (ब) कुपगल्लू
   (स) टेक्कलकोटा (द) भीमबेटका
5. मध्यप्रदेश में विध्यांचल की पहाड़ियों में स्थित है–
   (अ) कुपगल्लू (ब) टेक्कलकोटा
   (स) भीमबेटका (द) पिकलिहाल
6. भीमबेटका की गुफाओं की खोज की गई थी–
   (अ) कॉकबर्न द्वारा (ब) वी.ए. वाकणकर द्वारा
   (स) एंडरसन द्वारा (द) घोष द्वारा
7. भीमबेटका के रेखाचित्रों और चित्रकारियों को कितनी कालावधियों में वर्गीकृत किया गया है?
   (अ) तीन (ब) चार
   (स) पांच (द) सात
8. भीमबेटका के कलाकारों के सबसे पसंदीदा रंग थे–
   (अ) काला और पीला (ब) पीला और बैंगनी
   (स) सफेद और लाल (द) भूरा और हरा